IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जम्मु–कश्मीर के घर–घर की आवाज़ राज बेगम

Ph.D. Scholar: Iqbal Hussain Mir
Deptt. of Music, Punjabi University
Patiala, Pin: 147002

जम्मु–कश्मीर के घर–घर की आवाज़ ''राज बेगम''। 70 साल तक कश्मीरियों के दिलों की आवाज़ रहने वाली प्रसिद्ध गायिका 'राज बेगम' का जन्म 27 मार्च 1727 को मगरमल बाग श्रीनगर कश्मीर में हुआ । जम्मु–कश्मीर की 'आशा भौंसले' के नाम से मश्हूर राज बेगम रेडियो कश्मीर पर गाने वाली सबसे पहली स्त्री गायिका मानी जाती हैं।

राज बेगम के पिता का नाम गुलाम रसूल शेख था। पिता ने राज बेगम का असली नाम ''हाती'' रखा था। हाती को बचपन से ही गाने–बजाने का बहुत शौक था। घर वालों और रिश्तेदारों के लाख मना करने पर भी हाती पास–पड़ोस की शादियों व त्यौहारों पर अक्सर गाती रहती थी। इस तरह गाते–बजाते हुए एक दिन हाती को कश्मीर के एक मशहूर सारंगी नवाज़ 'गुलाम कादिर लंगू' (जो कि रेडियो कश्मीर के स्टाफ आर्टिस्ट थे) ने 'गाव कदल मैसुमा' श्रीनगर की एक शादी में गाते सुना तो हाती के गाने से बहुत प्रभावित हुआ और उन को रेडियो पर गाने की सलाह दी। इस तरह हाती ने 16 जुलाई 1950 को रेडियो कश्मीर पर पहली प्रस्तुति दी जिसमें उनका नाम सारंगी नवाज़ गुलाम कादिर लंगू ने हाती से बदलकर ''राज बेगम'' के नाम से परिचित करवाया। यह वो समय था जब रेडियो कश्मीर को स्थापित हुए एक दो साल ही हो गए थे। हाती पहली कश्मीरी स्त्री गायिका थी जिसने वाद्यों की संगत के साथ रेडियो पर अपने गायन की प्रस्तुति दी। लोग इनकी गायिकी और सुरीली आवाज़ के दीवाने हो गए और पूरी रियासत में इनके चर्चे होने लगे। इस तरह हाती को सब 'राज बेगम' के नाम से जानने लगे।

राज बेगन ने किसी उस्ताद या गुरू से सीखे बिना सबसे पहले लोक गीतों से शुरूआत की और धीरे–धीरे लोक गीतों के साथ–साथ गज़ल, हलके गीत और सूफी गायन में भी प्रसिद्धि प्राप्त की। जब उनका गाया हुआ गीत **रुम**

गयम शीसस, बे–गौर गौवा बान मियोन (अर्थ 'मेरा शीश जैसा दिल टूटकर चूर–चूर हो गया और मेरा जिस्म बेकार हो गया') बहुत मकबूल हुआ तो सब खासों–आम राज बेगम को उसकी आवाज़ से जानने पहचानने लगे और 1954 में राज बेगम को रेडियो कश्मीर में बतौरे स्टाफ–आर्टिस्ट नियुक्त किया गया।

एक दौर ऐसा आया जब राज बेगम ने कश्मीरी लोक संगीत की एक नयी और अनोखी धुन शैली **''गुलरेज़''** को बिना किसी वाद्य की संगत के गाया तो ये इतनी असरदार–पुरसोज़ अनदाज़ और आवाज़ साबित हुई कि धुन के प्रचार के साथ–साथ राज बेगम का नाम सितारों की तरह चमकने लगा और उन्हें "Kashmiri's Malody Queen" "Kashmir's Nightingale" के उपनाम दिये गये।

राज बेगम को कुदरत ने जो गुण व हुनर दिया था उसने तमाम उम्र उसकी तपस्या (आबयारी) की और कश्मीरी संगीत को एक नए मुकाम पर ले गयीं। उन्हें कश्मीरी गज़ल गायकी का बानी कहा जाता है।

सन् 1970 में एक बार हिन्दी फिल्मों के महान कलाकार श्री दलीप कुमार जी ने राज बेगम को श्रीनगर के एक होटेल में गाते सुना तो बहुत प्रभावित हुए और कहा "As long as Kashmir has Raj Begam its mesmerising voices shall never die"

राज बेगम केवल रेडियो से ही नहीं बल्कि संगीत की महफिलों में भी गाती रहीं। यहां तक कि वादी कश्मीर के अलावा कई अलग–अलग रियासतों जैसे दिल्ली, उत्तरप्रदेश, पंजाब, महाराष्ट्र, मध्य–प्रदेश आदि रियासतों में भी अपने गायन की प्रस्तुति दे चुकी हैं। राज बेगम के कुछ प्रमुख गीत जो पिछले 70 सालों से जम्मु–कश्मीर के घर–घर में गूंजते आ रहे हैं।

Famous songs:-

1. **वेसिये गुलन आमय बाहर, अज़ साल अन्तन बालयार** (अर्थ– सखी फूलों पर बाहर छायी है मेरे महबूब को दावत–ए–इश्क दे आवो)।
2. **सुबुह फोल बुलबुलो तुल शोर गो गाह, गयस बेदार मचिरेम चश्मा शेहलयाय** (अर्थ– सुबह हुई बुलबुलों ने शोर मचाया कि रोशनी हो गई, मैं जागी, आखें खोली तो ऐसा दृ"य देखा कि सकून आ गया।)
3. **वल अज़ वेसये दौख–सौख मश्रिथ शेहरो लोलिक खवाब** (अर्थ– आओ सखी कि सब दुख़–सुख़ भूलकर अपने ख्वाबों को सजाते हैं।)
4. **क्या–क्या वनय ए दोस्त च कम–कम सितम मशराय मे** (अर्थ– क्या–क्या कहूँ ऐ दोस्त तुम्हें कि मैंने कैसे–कैसे सितम सहे हैं।)
5. **मशरावथ्थस जानाना च कर याद पेमय बो** (अर्थ– मेरे महबूब तूने तो मुझे भुला ही दिया, मैं तुम्हें कब याद आऊँगी)।

राज बेगम को कई पुरस्कारों से नवाज़ा गया जिनमें मुख्य सम्मान इस प्रकार हैः–

Awards:-

1. Award of Excellence from Prasar Bharti, 1999.
2. Silver Shield - From Pracheen Kala Kendra, 2007.

3. J&K State Cultural Academy Award, 2009.
4. Sa.Ma.Pa Award for Her Life Time Contribution, 2009.
5. J&K State Government Award, 2008
6. The Government Award of M.P. 2004.
7. Sangeet Natak Akademy Award, 2013.
8. Padam Shri, The Fourth Highest Civilian Award, 2002.

पूर्व डायरक्टर आल इंडिया रेडियो 'पी सी चटर्जी' ने अपनी मशहूर पुस्तक "The Faces of All India Radio" में बहुत ही शानदान शब्दों में राज बेगम की तारीफें की हैं और लिखा है कि राज बेगम कश्मीरी संगीत का ताज है।

संगीत के सुर खामोश

राज बेगम का देहांत 26 अक्तूबर 2016 को 89 साल की उम्र में हो गया। हिन्दुस्तानी शास्त्री संगीत के महान कलाकार संतूर वादक भजन सौपुरी ने राजबेगम के देहांत पर बहुत दुख का इज़हार किया और कहा कि ये कश्मीरी संगीत के साथ–साथ सा–मा–पा परिवार के लिए बहुत बड़ा दुख और नुक्सान है। राज बेगम का कश्मीरी संगीत में बहुत बड़ा मुकाम है। जहां तक पहुंचना सबके बस में नहीं होता।

किसी ने सच ही कहा है कि फनकार कभी नहीं मरता है बल्कि हमेशा लोगों के दिलों में ज़िंदा रहता है। राज बेगम जम्मु–कश्मीर का अज़ीम सरमाया हैं और जम्मु–कश्मीरी कौम उनको हमेशा याद रखेगी क्योंकि उन्होंने हमेशा जम्मु–कश्मीरि के लोगों के दर्द को आवाज़ दी है।

Sources:

1. Interviews of Raj Begam by All India Radio Kashmir Srinagar
2. Interviews of Raj Begam by Doordarshan Srinagar, Kashmir
3. Interviews of Top-grade Artists of J & K
4. Leading News Papers of J & K